पढई तुंहर दुआर परियोजना, शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ शासन में उपलब्ध ई-सूचना संग्रहः विद्यालयीन शिक्षा एवं महाविद्यालयीन शिक्षा के विशेष संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विनोद कुमार अहिरवार
ग्रंथपाल, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग छत्तीसगढ़

राजलक्ष्मी पाण्डेय
शोधार्थी,
डॉ सी. व्ही रमन विश्वविद्यालय बिलासपुर छत्तसीगढ़

डॉ संगीता सिंह
विभागाध्यक्ष,
डॉ सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय कोटा , बिलासपुर

सारांश

छत्तीसगढ राज्य मध्यप्रदेश से पृथक हुआ एक नवोदित राज्य है। यह तेजी से विकास करने वाले नवोदित राज्यों में अग्रणी स्थान रखता है, एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी यह राज्य निरंतर तेजी से विकास कर रहा है। राज्य में शिक्षा में अनेक बाधाओं एवं कठिनाईओं का सामना करना पडता हैं। यह राज्य नक्सली प्रभावित होने के कारण बहुत बडी बाधा नक्सली प्रभावित क्षेत्रों की शिक्षा को संचालित करने में होती है। इस राज्य का बहुत बडा हिस्सा दुर्गम पहुच वाला होने से सम्पूर्ण शिक्षा प्रदान करने में बहुत अधिक कठिनाईओं का सामना करना पडता है। छत्तीसगढ राज्य की महत्वकांक्षी परियोजना पढई तुंअर दुआर के माध्यम से शिक्षा में आने वाली इन कठिनाओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। इस प्रयास में राज्य कितना सफल हुआ एवं इस परियोजना की सार्थकता पर इस लेख में विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

सूचना विस्फोट के इस युग में किसी भी विषय में संबंधित एवं आवश्यकता की सूचनाओं की पुनःप्राप्ति एक दुर्गम कार्य है। इस कार्य को सुगम बनाने की दृष्टि से ई-सूचना स्रोतों एवं आनलाईन सूचना स्रोतों का प्रार्दुभाव हुआ। इन अपरम्परागत आधुनिक सूचना स्रोतों का सबसे अधिक लाभ यह है, कि इनको सप्ताह के सातो दिन एवं चैबीस घंटे अभिगम्य किया जा सकता हैं। कोविड 19 महामारी के इस दौर में इन सूचना स्रोतों को उपयोग करने से शिक्षा में उत्पन्न बाधा को दूर करने में बहुत अधिक सहायता प्राप्त हुई, एवं अपूर्ण शिक्षा को पूर्ण किया जा सका। इस दिशा में छत्तीसगढ शासन, शालेय शिक्षा विभाग एवं उच्च शिक्षा विभाग के माध्यम से 'पढई तुंहर दुआर' परियोजना को प्रारंभ किया गया। यह महत्वकांक्षी परियोजना शालेय एवं महाविद्यालीन शिक्षा को संचालित करने में बहुत अधिक उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्व हो रही है। इसके माध्यम से विद्वान शिक्षकों द्वारा निर्मित उच्च स्तरीय आडियो, वीडियो व्याख्यान एवं पीडीएफ पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है।

छत्तीसगढ राज्य में शिक्षा

1 नवंबर 2000 में गठित छत्तीसगढ राज्य मध्यप्रदेश राज्य से पृथक हुआ तेजी विकास करने वाले राज्यों में से एक है। इस राज्य में नक्सलवाद सबसे बडी समस्या है। नक्सल समस्या के कारण राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के साथ-साथ सम्पूर्ण प्रदेश की शिक्षा को उत्कृष्ट बनाने में कठिनाईओं का सामना करना पडता है। शिक्षा में राज्य की भौगोलिक स्थिति भी बाधा डालती है। इसका अबूझमाड एवं बस्तर का क्षेत्र नक्सली समस्या के साथ-साथ दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण भी शिक्षा से अछूता है। राज्य शासन के द्वारा राज्य के गठन के समय से ही शिक्षा के इस पिछडेपन को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षा को आधुनिक सूचना संचार प्रौद्योगिकी एवं सूचना प्रोद्योगिकी से परिपूर्ण बनाने हेतु संसाधनों को उपलब्ध कराने का प्रयास राज्य में किया गया। यही कारण है, कि राज्य में शासकीय शिक्षा संस्थानों के अतिरिक्त निजि क्षेत्र के भी शिक्षा संस्थानों को खोलने में रूचि ली गयी। वर्तमान में छत्तीसगढ में शासकीय एवं निजी शिक्षण संस्थानों का उत्कृष्ट तंत्र कार्य कर रहा है। यहा 8 शासकीय विश्वविद्यालय एवं 13 निजी विश्वविद्यालय संचालित हो रहे है। शासकीय विश्वविद्यालयों के अधीन 265 शासकीय महाविद्यालय, 12 अनुदान प्राप्त महाविद्यालय, 244 अनुदान अप्राप्त अशासकीय महाविद्यालय, 28 कृषि महाविद्यालय, 02 पशु चिकित्सा महाविद्यालय, 01 डेरी प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, 01 मत्स्यकी महाविद्यालय, 44 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 40 पालीटेक्निक महाविद्यालय, 1 आर्किटेक्चर इन्सटीट्यूट एवं 11 फार्मेसी महाविद्यालय स्थापित है। इन्ही शिक्षण संस्थानों के माध्यम राज्य में उच्च शिक्षा संचालित हो रही है।

इस प्रकार छत्तीसगढ राज्य सभी विषय क्षेत्रो जैसे- कला , वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय, कृषि, वानिकी एवं इससे संबद्व विषय क्षेत्रों में इन महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में उत्कृष्ट शिक्षा का संचालन किया जाता है। इन शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा की उत्कृष्टता को बनाये रखने के लिये उन्नत पुस्तकालय एवं ई-सूचना स्रोत भी उपलब्ध है। इन शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, तकनीकि शिक्षा विभाग एवं कृषि एवं पशुधन विभाग की और से आनलाईन शिक्षा को उन्नत किया जा रहा है। निश्चित ही इन शैक्षणिक संस्थानों एवं विभागों की ओर से किये जा रहे प्रयास शिक्षा में गुणवत्ता के साथ-साथ उत्कृष्टता भी प्रदान करेगें।

छत्तीसगढ राज्य में विद्यालयीन शिक्षा

विद्यालयीन शिक्षा में छत्तीसगढ राज्य की स्थापना के समय से ही सतत एवं निरंतर विकास प्रारंभ हुआ राज्य शासन के द्वारा नवीनतम विद्यालयों के निर्माण एवं उपलब्ध विद्यालयों की जीर्णोधार किया गया। वर्तमान में अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को स्थापित किया जा रहा है। एकलब्ध्य विद्यालयों को अधिक उत्कृष्ट बनाने की दृष्टि से इन विद्यालयों में शैक्षणिक स्टाफ के साथ-साथ ग्रंथपालों की नियुक्ती प्रक्रिया की गई। इसी सत्र 100 महात्मा आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों को

खोलने का निर्णय छत्तीसगढ शासन ने किया है। वर्तमान में राज्य शासन के विद्यालयों में पुस्तकालयों की स्थिती केन्द्र शासन एवं निजि क्षेत्र के सार्वजनिक विद्यालयों के पुस्तकालयों के समान उत्तम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। राज्य में यह कार्य प्रगति पर है, निश्चित रूप से यह कार्य शीध्र ही पूर्ण हो जायेगा और शालेय विद्यार्थियों को उत्कृष्ट पुस्तकालय सुविधा का लाभ प्राप्त होगा।

छत्तीसगढ राज्य में केन्द्रीय एवं नवोदय विद्यालय विद्यालयीन शिक्षा में अपना योगदान दे रहे है। यहां 42 केन्द्रीय विद्यालय एवं 24 नवोदय विद्यालय संचालित है। इनमें पुस्तकालय की उत्कृष्ट सेवा विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है। उत्कृष्ट पुस्तकालय सेवा के माध्यम से इन विद्यालयों में शिक्षा का स्तर भी उत्कृष्ट रहता है। इन विद्यालयों की पुस्तकालय सेवा में ई-सूचना सेवा प्रमुख होती है।

राज्य शासन ने भी विद्यालयीन विद्यार्थियों को ई-सूचना सेवा की सुविधा का लाभ देने की दृष्टि से पढई तुंहर दुआर कार्यक्रम को प्रारंभ किया और इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों की कक्षाओं की पढाई को पूरा करने में सहायता प्रदान करना प्रारंभ किया। इस परियोजना के माध्यम से सूचना स्रोतों एवं वीडिया/आडियो व्याख्यान की सुविधा को आनलाईन प्रारंभ किया गया। बाद में इस प्राजेक्ट का लाभ उच्च शिक्षा से संबंधित विद्यार्थियों को भी ई-सूचना स्रोत, आडियो/ वीडियो व्याख्यान एवं पाठ्य सामग्री ई-स्वरूप में उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है।

छत्तीसगढ में महाविद्यालयीन एवं उच्च शिक्षा

छत्तीसगढ राज्य में महाविद्यालयीन एवं उच्च शिक्षा की स्थिति को उत्कृष्ट बनाने के लिये यहां शासकीय महाविद्यालयों एवं निजी महाविद्यालयों का नेटवर्क एक तंत्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। प्रत्येक सत्र नवीनतम महाविद्यालय एवं नवीनतम पाठ्यक्रमों को प्रारंभ किया जा रहा है। छत्तीसगढ में महाविद्यालयीन शिक्षा का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तारित है। यहां शिक्षा अभियांत्रिकी पोलीटेक्निक, कृषि, चिकित्सा, आयुर्वेद, पशुविज्ञान एवं पशुचिकित्सा महाविद्यालय इत्यादि के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। छत्तीसगढ राज्य में उच्च शिक्षा को उत्कृष्ट बनाये रखने हेतु लगातार विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों का विस्तार कर रहा है। इस विस्तार को गति देने एवं युवाओं को उत्कृष्ट उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान करने की दृष्टि से 8 शासकीय विश्वविद्यालय 13 निजि विश्वविद्यालय 265 शासकीय महाविद्यालय 12 अनुदान प्राप्त अशासकीय महाविद्यालय तथा 244 अनुदान अप्राप्त अशासकीय महाविद्यालयों को संचालित कर रहा है। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों का लगातार विस्तार निरंतर जारी होने से राज्य में उच्च शिक्षा सभी युवाओं को सहजता से प्राप्त हो रही है। इन विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं की उपलब्धता अनिवार्य की गयी है। राज्य शासन द्वारा शासकीय महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षकीय पदों के साथ-साथ पुस्तकालयों को उत्कृष्ट बनाने की दृष्टि से ग्रंथपाल पद पर भी नियुक्ति अनिवार्य की है। उच्च विभाग के माध्यम से शिक्षा विभाग के सहयोग से पढई तुंहर दुआर योजना से जुडे

विद्यार्थियों को वीडियो/आडियो लेक्चर उपलब्ध कराये जा रहे है। इन लेक्चर के साथ-साथ ई-सूचना स्रोतों की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जा रही है। ''पढई तुंहर दुआर'' छत्तीसगढ शासन की एक महत्वकाक्षी परियोजना है।

छत्तीसगढ में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के अलावा कृषि, वानिकी एवं इससे संबंधित विषयों की शिक्षा, अभियांत्रिकी शिक्षा, चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा एवं नर्सिंग विज्ञान इत्यादि की उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान की जाती है। कृषि एवं संबद्व विषयों की शिक्षा हेतु इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर में स्थापित है। वहीं पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुविज्ञान एवं इससे संबद्व विषयों मे अध्ययन हेतु छत्तीसगढ कामधेनू विश्वविद्यालय दुर्ग में स्थापित है। वर्ष 2020 में उद्यानिकी विश्वविद्यालय की आधार शिला रखी गयी, जिसका नाम महत्मा गांधी उद्यानिकी विश्वविद्यालय रख गया। छत्तीसगढ में कृषि शिक्षा को अधिक सुदर्ण बनाने के लिये नवीन कृषि महाविद्यालयों की स्थापना भी की जा रही है।

इन सभी शिक्षण संस्थानों हेतु ई-सूचना स्रोत एवं ई-सूचना सेवा राष्ट्रीय स्तर के कन्सोरटिया CeRA के माध्यम से उपलब्ध कराये जाते है। पूरे भारतवर्ष के साथ-साथ छत्तीसगढ में कृषि एवं इससे संबद्व विषयों के विभिन्न पाठ्यक्रमों में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय को एक अनिवार्य प्रश्न पत्र के रूप में सम्मिलित किया गया है। निश्चित रूप से इस पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान को एक प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियो को पुस्तकालय का अच्छे उपयोगकर्ता बनाने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार छत्तीसगढ में विभिन्न संकायो एवं विषयों में उच्च शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था है। यहां उच्च शिक्षा में योगदान हेतु पुस्तकालयों का एक उत्कृष्ट तंत्र कार्य कर रहा है। राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय सूचना सेवाओं के साथ छत्तीसगढ में राज्यकीय स्तर पर विद्यालयीन एवं उच्च शिक्षा हेतु 'पढई तुंहर दुआर' परियोजना के द्वारा दृश्य-श्रव्य व्यख्यान एवं अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध करायी जा रही है। इस महत्वकांक्षी परियोजना के माध्यम से निश्चित रूप से छत्तीसगढ राज्य शिक्षा में उत्कृष्ट लाने में सफल सिद्व होगा।

आनलाईन शिक्षाः

शिक्षा मनुष्य के जीवन का विकसित करने के अनिवार्य अंग है। जीवन पर्यन्त मनुष्य किसी न किसी रूप में किसी न किसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करता रहता है। वर्तमान कोविड 19 के समय शिक्षा एवं शिक्षण कार्य में अनेक बाधाये उत्पन्न हो गई है। इस दौर में शिक्षा को पूर्ण करने के लिये आनलाईन शिक्षा का महत्व बहुत अधिक बढ गया है।

अनेक विद्यार्थी शिक्षण संस्थानो मे शिक्षा गृहण करने शिक्षण संस्थानों में नियमित रूप से अध्ययन हेतु उपस्थित होने में असमर्थ होते हैं। ऐसे विद्यार्थियों को भारत भारत में आनलाइन शिक्षा की शुरूआत 1994 से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रारंभ हुई। उस समय एकतरफा वीडियो एवं दोतरफा आडियो संचार होता था। वर्तमान में आधुनिक उपकरण जैसे कम्प्यूटर,

लेपटाप, मोबाईल फोन, पेजर, टेबलेट इत्यादि इलेक्ट्रानिक उपकरणों के माध्यम से आनलाईन शिक्षा प्रदान की जा रही है।

आनलाईन शिक्षा हेतु आवश्यकतायें

वर्तमान आनलाईन शिक्षा बहुत अधिक विकसित हो गई है, इसके लिये अनेक आवश्यकतायें होती है, ये आवश्यकताये निम्न प्रकार है

1. **इन्टरनेट कनेक्शनः** आनलाईन शिक्षा हेतु इन्टरनेट अत्यन्त आवश्यक होता है। इस आवश्यकता को देखते हुये केन्द्र शासन, अनेक राज्य शासन एवं अनेक शिक्षण संस्थायें वाई-फाई के माध्यम से इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध करा रहे है।

2. **इलेक्ट्रानिक उपकरणः** आनलाईन शिक्षा के लिये इलेक्ट्रानिक उपकरण भी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इन उपकरणों के द्वारा इन्टरनेट के माध्यम से दोतरफा आनलाईन शिक्षा संचालित की जा सकती है।

3. **साफ्टवेअर एवं ऐपः** आनलाईन शिक्षा के लिये तीसरी सबसे बढी आवश्यकता साफ्टवेअर एवं ऐप की होती हैं। आनलाईन शिक्षा को शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिये अधिक सुगम बनाने की दृष्टि से साफ्टवेअर एवं ऐप अनिवार्य होते हैं। कोविड 19 के वर्तमान में काल में आनलाईन शिक्षा हेतु अनेक साफ्टवेअर एवं ऐप विकसित हुये है। ये सभी साफ्टवेअर एवं ऐप आनलाईन शिक्षा प्रदान करने की दिशा में बहुत प्रभावी सिद्व हो रहे है।

आनलाईन शिक्षा के लाभः

आनलाईन माध्यमों से शिक्षा को संचालित करना बहुत अधिक लाभदायक है। इन कक्षाओं के महत्वपूर्ण निम्न प्रकार हैः

1. आनलाईन शिक्षा हेतु कक्षाओं के संचालन हेतु बहुत अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं होती। विद्यार्थी शिक्षण संस्थानों में आये वगैर ही अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकता है।

2. आनलाईन शिक्षा में कक्षाओं में हाने वाले शोर-गुल के कारण अवरोध उत्पन्न नहीं होते।

3. आनलाईन कक्षाओं के माध्मय से कक्षाओं में अध्ययन एवं अध्यापन से संबंधित पाठ्य सामग्री को सहजता से सभी सहभागियों को उपलब्ध करायी जा सकती है।

4. आनलाईन शिक्षा का संचालन किसी भी समय सुविधानुसार किया जा सकता है।

5. साफ्टवेअर एवं ऐप के माध्यम से आनलाईन कक्षाओं के व्याख्यानों को सहेज कर रखना बहुत आसान है।

आनलाईन शिक्षा के इन महत्वपूर्ण लाभों के कारण वर्तमान समय में शिक्षा प्रदान करना सहज एवं प्रभावी हो गया है।

आनलाईन शिक्षा की सीमायें:

आनलाईन माध्यमों से शिक्षा के संचालन की बहुत सीमाये भी है। कुछ परिस्थितियों में आनलाईन शिक्षा के माध्यम से अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में बाधाये उत्पन्न हो रही है।

1. इस माध्यम से शिक्षा के संचालन हेतु इन्टरनेट कनेक्टीविटी अनिवार्य है। यदि इन्टरनेट कनेक्टीविटी का आभाव होता है, तो आनलाईन शिक्षा का संचालन करना संभव नहीं होता।

2. आनलाईन शिक्षा हेतु मंहगे इलेक्ट्रानिक उपकरणों की आवश्यकता होती, इन महंगे इलेक्ट्रानिक उपकरणों को सभी विद्यार्थी क्रय नहीं कर पाते, इस कारण से आनलाईन शिक्षा से वंचित रह जाते है।

3. आनलाईन शिक्षा हेतु अनेक बार अबाध्य विधुत प्रदाय भी अनिवार्य होता है। अवाध्य विधुत प्रवाह के आभाव में भी आनलाईन शिक्षा वाधित होती है।

4. परंपरागत शिक्षा के स्थान पर आनलाईन शिक्षा हेतु उपयोग में आने वाले उपकरणो, साफ्टवेअर एवं ऐप से प्रायः विद्यार्थी एवं शिक्षक परिचित नहीं होते, यह साफ्टवेअर एवं ऐप बहुत अधिक महंगे होने के कारण भी कम बजट वाले शिक्षण संस्थायें इनके शुल्क का भुगतान नहीं कर पाते।

आनलाईन शिक्षा की सीमाये लाभो की तुलना में बहुत कम है, जो सीमाये हैं उन सीमाओं को दूर करने का प्रयास केन्द शासन एवं राज्य शासन के द्वारा किये जा रहे है। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ राज्यो सहित भारतवर्ष के अन्य राज्यों में भी आनलाईन शिक्षा हेतु पूरी व्यवस्था की जा रही है, इसके लिये अलग से पूरी अधोसंरचना को विकसित किया जा रहा है। इन राज्य शासन एवं केन्द्र शासन की ओर से महंगे इलेक्ट्रानिक उपकरणों को विद्यार्थियों को निशुल्क प्रदाय की व्यवस्था भी की गई है।

छत्तीसगढ में आनलाईन शिक्षा

कोविड 19 महामारी के कारण हुये लाकडाउन के समय शिक्षा को अनवरत जारी रखने के लिये आनलाइन शिक्षा की व्यवस्था को तत्परता से प्रारंभ किया गया। छत्तीसगढ राज्य में इसके लिये प्रारंभ में विभिन्न मोबाईल ऐप के माध्यम से आनलाइन कक्षाओं का संचालन करके अपूर्ण पाठ्यक्रम को पूर्ण किया गया। पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद परीक्षा संचालन का कार्य भी अत्यधिक दुर्गम था, इस कार्य को भी परीक्षा केन्द्रों में आये बगैर आनलाईन पद्वति के आधार पर पूर्ण किया गया। नवीन शिक्षा सत्र में अबाध्य रूप से शिक्षा का संचालन होता रहे इसके लिये छत्तीसगढ शासन की ओर से एक महत्वकांक्षी

परियोजना पढई तुंहर दुआर को प्रारंभ किया गया। इस परियोजना के माध्यम से आनलाईन कक्षाओं के संचालन के साथ-साथ दृश्य एवं श्रव्य स्वरूप में व्याख्यान विद्यार्थियों को उपलब्ध कराये जा रहें है। इस परियोजना के अलावा विभिन्न विद्यालय एवं महाविद्यालय अपने स्वयं के द्वारा विकसित तंत्र के माध्यम से भी आनलाईन कक्षाओं का संचालन कर रहे है।

सीजीस्कूलडाटइन (cgschool.in)

इस वेबसाईट को छत्तीसगढ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के द्वारा तैयार किया गया है। इस वेबसाईट का उपयोग विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के द्वारा अध्ययन एवं अध्यापन हेतु सामान्य रूप से किया जाता है। इसकी सुविधाओं का लाभ लेने के लिये इसमें पंजीयन करना अनिवार्य है। इसमें ई-सूचनाओं को पीडीएफ एवं अन्य साफ्टवेअर के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है। दृश्य, श्रव्य व्यख्यानो एवं कक्षाओं को यू-ट्यूब की सहायता से संचालित किया जाता है।

पढई तुंअर दुआर परियोजना

कोविड 19 के दौर में शिक्षा को निंबाध्य गति देने के उद्देश्य से शालेय शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन के सरंक्षण में पढई तुंअर दुआर परियोजना प्रारंभ की गयी इस परियोजना के माध्यम से आनलाईन कक्षाओं का संचालन एवं दृश्य एवं श्रव्य प्रारूप में व्याख्यानों के माध्यम से शिक्षा को पूर्ण करने का प्रयास किया जा रहा है। सत्र 2019-20 शिक्षा सत्र को शासन ने अथक प्रयास से सफलता पूर्वक पूर्ण कर लिया था, किन्तु शासन को नवीन शिक्षा सत्र को प्रारंभ करना एक दुर्गम कार्य था। छत्तीसगढ राज्य में कोविड 19 के बढते प्रकोप एवं लाकडाउन के कारण परंपरागत शिक्षा के स्थान पर आनलाईन शिक्षा को प्रारंभ करना अनिवार्य हो गया था। पढई तुंअर दुआर या cgschool App परियोजना को शालेय शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में प्रारंभ किया गया, बाद में इस परियोजना का लाभ महाविद्यालयीन एवं विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों को देना प्रारंभ कर दिया गया है। इस महत्वकांक्षी परियोजना के माध्यम से शिक्षा को एक नवीन आयाम देना संभव हो पा रहा है। शिक्षा को पूर्ण करने में यह परियोजना सहायक सिद्व हो ही रही है, साथ ही साथ इसके माध्यम से शिक्षा में उत्कृष्टता लाने में भी बहुत योगदान प्राप्त हो रहा है। इस परियोजना की सफलता इसी से दिखती कि इसके प्रारंभ होने के बाद से अब तक विभिन्न स्तरों के 5301381 विद्यार्थियों ने इसमें अपना पंजीयन कर लिया है। इसमें योगदान देने वाले शिक्षको की संख्या 211726 है। इसके माध्यम से विभिन्न स्तर की आनलाइन कक्षाओं संचालन किया जाता है। इन कक्षाओं का लाभ विद्यार्थी शैक्षणिक संस्थान जाये बगैर नियमित रूप से ले रहे हैं।

पढई तुंअर दुआर परियोजना की उपयोगिता

छत्तीसगढ जैसे विकासशील राज्य में शिक्षा का स्तर देश के अन्य राज्यों की तुलना में बहुत पीछे है। इसका एक कारण यहां शिक्षा हेतु उपलब्ध अधोसरंचना की अपर्याप्त भी है। अधोसंरचना की इस कमी को पूरा करने में पढई तुअर दुआर परियोजना अत्यधिक उपयोगी सिद्व हो रही है। इस परियोजना के महत्वपूर्ण उपयोग निम्न प्रकार हैः

1. शिक्षा संस्थान आये बगैर विद्यार्थियों के अध्ययन को पूरा कराने में सहायता देना।
2. उनके विषय पर आनलाईन ई-सूचना स्रोत उपलब्ध कराना।
3. विद्यार्थियों को इस परियोजना में पंजीकरण की सुविधा देना।
4. विद्यार्थियों को सत्रीय कार्य को पूरा करने हेतु सुविधा उपलब्ध कराना।
5. विद्यार्थियों की शंकाओं के समाधान हेतु प्रश्न एवं उत्तर से संबंधित मार्गदर्शन देना।
6. शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के लिये उपयोगी कंटेन्ट अपलोड करना।
7. वर्चुअल कक्षाओं को आयोजित करने हेतु संपूर्ण अधोसंरचना को विकसित करना।
8. परियोजना की सुविधा में उत्पन्न की जाने वाली बाधा को रोकने में सहायता करना।
9. विद्यार्थियों का आनलाईन मूल्यांकन करने में सहायता करना।

पढई तुंअर दुआर परियोजना के सहायक कार्यक्रमः

पढई तुंअर दुआर परियोजना के माध्यम से आनलाईन शिक्षा को और अधिक रोचक बनाने के लिये इसके अन्तर्गत के सहायक कार्यक्रमों को प्रारंभ किये गये । इन कार्यक्रमों के माध्यम से आनलाईन शिक्षा को बहुत अधिक उपयोगी बनाया गया। इन कार्यक्रमो में प्रमुख कार्यक्रम इस प्रकार हैं:

शिक्षा के गोठ:

इसके माध्यम से शिक्षा एवं सीखने की गति को बनाये रखने के उद्देश्य से स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आनलाईन शिक्षा के माध्यम से किये गये नवचार को रेखांकित करके प्रकाशित करने के उद्देश्य से शिक्षा के गोठ न्यूज लेटर का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इस न्यूज लेटर के माध्यम शिक्षा में गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता लाने हेतु किये गये प्रयासों को आमजन तक पहुचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है।

पढई तुंअर पारा:

कोविड 19 महामारी के कारण समस्त विश्व के साथ-साथ छत्तीसगढ में सम्पूर्ण शिक्षा, इसमें मुख्य रूप से शालेय शिक्षा पूर्णतः बन्द है। परन्तु ऐसे समय में छत्तीसगढ शासन स्कूल शिक्षा विभाग का महत्वपूर्ण प्रयास शिक्षकों के माध्यम से समुदाय द्वारा उपलब्ध कराये गये स्थान पर लाउड स्पीकर के माध्यम से बच्चों की शिक्षा को जारी रखा गया। वर्तमान समय में शिक्षा को गति देने की दिशा में यह महत्वपूर्ण एवं उपयोगी कार्यक्रम है।

सीजी स्कूल ऐप (cgschool App) :

प्रत्येक ई-सूचना स्रोत देखने या आनलाईन माध्यम से शिक्षा को प्राप्त करने के लिये किसी न किसी इलेक्ट्रानिक डिवाईस की आवश्यकता होती है। इन इलेक्ट्रानिक डिवाईस में मोबाईल मुख्य उपकरण है। मोबाईल को आसानी से कहीं पर ले जाया जा सकता है, एवं इनसे सूचनाओं को भी सहजता से देखा जा सकता है। मोबाईल फोन के माध्यम से सूचनाओं को देखने एवं आनलाईन कक्षाओं से जुडने हेतु ऐप की आवश्यकता होती है। यह ऐप स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन के द्वारा पढई तुंअर दुआर परियोजना के माध्यम से गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध कराया गया है।

बुल्टु ऐप

बुल्टु ऐप शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन के विकसित करवाया गया छात्रोपयोगी शिक्षकीय ऐप है। इस ऐप के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न कक्षाओं में पढाये गये अध्यायों की ध्वनी को श्रव्य फाईल के रूप में अपने मोबाईल फोन में संग्रहित करके रख सकते हैं। इस आडियो को ब्लूटुथ के माध्यम से सुन सकते है। संग्रहित किये गये श्रव्य फाईल को किसी अन्य विद्यार्थी को भी भेज सकते है।

उच्च शिक्षा हेतु कार्यक्रमः

पढई तुंअर दुआर परियोजना के माध्यम से मात्र विद्यायलीन छात्र एवं छात्राओं को ही आनलाइन शिक्षा की सुविधा प्रदान नहीं की जाती बल्कि इसके माध्यम से उच्च शिक्षा से संबद्व महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की आनलाइन शिक्षा की उत्कृष्ट व्यवस्था भी की गयी है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्राध्यापको के द्वारा तैयार किये दृश्य/श्रव्य व्यख्यानों को आनलाईन सप्ताह के 7 दिनो एवं 24 घंटे उपलब्ध कराये जाते है। प्राध्यापको के द्वारा निरंतर वर्चुअल कक्षाओ का आयोजन भी किया जाता है। छत्तीसगढ में कोविड 19 महामारी के कारण हुये लाकडाउन के समय उच्च शिक्षा एवं महाविद्यालयीन शिक्षा को निर्वाध रूप से पूर्ण करने का मुख्य श्रेय पढई तुंअर दुआर परियोजना को ही जाता है। पिछले सत्र 2019-20 की अपूर्ण रह गयी शिक्षा को पूर्ण करने का श्रेय इस परियोजना को ही जाता है। वर्तमान शिक्षा सत्र 2020-21 में महाविद्यलयीन शिक्षा को इस परियोजना के माध्यम से पूर्ण करने का दायित्व इसी परियोजना पर निर्भर है। अगले शिक्षा सत्र के अध्ययन एवं अध्यापन की योजना पढई तुंअर दुआर परियोजना को केन्द्र में रख कर बनाई गयी और उसके अनुरूप शिक्षण कार्य को गति दी गयी। वर्तमान शिक्षा सत्र हेतु इस परियोजना के माध्यम से अनेक वीडियो एवं आडियो पहले से ही तैयार कर उपलब्धता सुनिश्चित की गयी है। निश्चित रूप से यह परियोजना विद्यालीन शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा एवं महाविद्यालयीन शिक्षा को पूर्ण करने हेतु अत्यधिक उपयोगी है।

पढई तुंअर दुआर परियोजना के माध्यम से स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं हेतु महाविद्यालयीन प्राध्यापकों के द्वारा विषय वस्तु, दृश्य-श्रव्य व्यख्यान, वर्चुअल कक्षाओं का आयोजन, विद्यार्थियों के द्वारा असाईनमेंट कार्य को पूर्ण करवाने में सहयोग प्रदान करना इत्यादि कार्यो को किया जाता है। इसमें विद्यार्थियो एवं शिक्षकों के पंजीयन की सुविधा भी दी जाती है। इस परियोजना के

माध्यम से विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान भी किया जाता है। इसमें कोर्स मटेरियल की उपलब्धता को भी सुनिश्चित किया गया है। इस परियोजना में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली सुविधओं को निम्न सारणी के अनुसार तथ्यों को प्रदर्शित किया जात सकता हैः

सारणी क्रमांक 1

महाविद्यालयीन शिक्षा हेतु अपलोड सामग्री से संबंधित तथ्य

क्रमांक	सूचना स्रोतों/अपलोड पाठ्य सामग्री/अन्य पाठ्य	सख्या
1	हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के अलावा अन्य भाषा में अपलोड विषय वस्तु	79
2	विद्यार्थियों द्वारा अपलोड किये असाईनमेंट	3482579
3	वर्चुअल कक्षायें	131
4	असाईनमेंट के प्रश्नों की संख्या	56
5	जांच के पश्चात अपलोड किये गये असाईनमेंट	6563
6	आनलाइन कक्षाओं की संख्या	18
7	अपलोड किये गये लर्निग वीडियो की संख्या	15305
8	अपलोड किये गये लर्निग आडियो की संख्या	367
9	अपलोड किये फोटो (पीडीएफ) की संख्या	801
10	लर्निग कोर्स मटेरियल	4416
	अपलोड किये गये कुल आयटम की संख्या	3510315

सारणी क्रमांक 1 के माध्यम से महाविद्यालयीन शिक्षा हेतु पढई तुंअर दुआर परियोजना में अपलोड की गयी अध्ययन सामग्री से संबंधित तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है। महाविद्यालीन विद्यार्थियों के द्वारा अपलोड किये गये असाईनमेंट की संख्या 3482579 है, आयोजित होने वाली वर्चुअल कक्षाओं की संख्या 131 है, प्राध्यापकों के द्वारा तैयार कर अपलोड किये गये असाईनमेंट (प्रश्न) की संख्या 56 है, प्राध्यापकों के द्वारा जांच के उपरान्त अपलोड किये गये असाईनमेंट की संख्या 6563 है, आनलाईन कक्षाओं की संख्या 18 है, अपलोड किये गये लर्निग वीडियो की संख्या 15305, अपलोड किये गये लर्निग आडियो की संख्या 367 एवं अपलोड फोटो (पीडीएफ) की संख्या 801 है। इस परियोजना में 4416 लर्निग कोर्स मटेरियल को अपलोड किया गया है।

पढई तुंअर दुआर परियोजना में हिन्दी और अग्रंेजी भाषा के अलावा छत्तीसगढ की अन्य क्षेत्रीय भाषा में अपलोड की गयी विषय वस्तु की संख्या 79 है, यह संख्या विद्यालयीन एवं महाविद्यालीन शिक्षा हेतु संयुक्त रूप से प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार इस परियोजना में महाविद्यालीन शिक्षा हेतु अपलोड की गयी आनलाईन आयटम की संख्या 3510315 है। इतनी बडी संख्या में संग्रहित की गयी

आनलाईन अध्ययन सामग्री से निश्चित रूप महाविद्यालयीन विद्यार्थी अपने अध्ययन को पूर्ण करने में सफल हो रहे है। ।

विद्यालयीन शिक्षा से संबंधित तथ्य

पढई तुंअर दुआर परियोजना स्कूल शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन के द्वारा मुख्य रूप से कोविड 19 महामारी के कारण हुये लाकडाउन के समय पिछले सत्र की अपूर्ण शिक्षा की पूर्ण करने के लिये प्रारंभ की गयी थी इसके द्वारा www.cgschool.in वेबसाईट के माध्यम से विद्यार्थियों हेतु आनलाईन शिक्षा की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। इससे संबंधित तथ्यों को निम्न सारणी के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता हैः

सारणी क्रमांक 2

शालेय शिक्षा हेतु अपलोड सामग्री से संबंधित तथ्य

क्रमांक	सूचना स्रोतों/अपलोड पाठ्य सामग्री/अन्य पाठ्य	सख्या
1	हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा के अलावा अन्य भाषा में अपलोड विषय वस्तु	79
2	विद्यार्थियों द्वारा अपलोड किये असाईनमेंट	272782
3	वर्चुअल कक्षायें	46861
4	असाईनमेंट के प्रश्नों की संख्या	19549
5	जांच के पश्चात अपलोड किये गये असाईनमेंट	246712
6	आनलाइन कक्षाओं की संख्या	977562
7	अपलोड किये गये लर्निग वीडियो की संख्या	24496
8	अपलोड किये गये लर्निग आडियो की संख्या	1150
9	अपलोड किये फोटो (पीडीएफ) की संख्या	15471
10	लर्निग कोर्स मटेरियल	4532
	अपलोड किये गये कुल आयटम की संख्या	1609194

सारणी क्रमांक 2 के द्वारा शालेय शिक्षा हेतु उपयोगी किये गये आनलाईन शिक्षा के प्रयासो से संबंधित तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है। शालेय शिक्षा हेतु पढई तुंअर दुआर परियोजना में विद्यार्थियों के द्वारा 272782 असाईनमेंट अपलोड किये गये है, 46861 वर्चुअल कक्षाओ का आयोजन किया गया है, शिक्षकों के द्वारा 19549 असाईनमेंट से संबंधित प्रश्नो को अपलोड किया गया है, शिक्षको के द्वारा जाचें गये 246712 असाईनमेंट अपलोड किये गये हैं, आयोजित की जाने वाली आनलाईन कक्षाओं की संख्या 977562 है, अपलोड लर्निग वीडियो की संख्या 24496, अपलोड लर्निग आडियो की संख्या 1150,

अपलोड फोटो (पीडीएफ) की संख्या 15471 है। इसके अलावा लर्निग कोर्स मटेरियल की संख्या 4532 है। इस प्रकार पढई तुंअर दुआर परियोजना के माध्यम से विद्यालयीन छात्र एवं छात्राओं को पर्याप्त आनलाईन अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने का लक्ष्य पूर्ण किया गया है। परियोजना में अपलोड किये गये कुल आयटम की संख्या 1609194 है। यह परियोजना पिछले शिक्षा सत्र के लिये तो अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा ही है, साथ ही साथ वर्तमान शिक्षा सत्र 2020-21 के लिये भी उपयोगी सिद्व हो रहा है।

पंजीयन से संबंधित तथ्य

कोविड 19 महामारी के कारण शैक्षणिक संस्थानों में प्रत्यक्ष रूप से असंभव हुये अध्ययन एवं अध्यापन कार्य को गति प्रदान करने के उद्देश्य से प्रारंभ हुई परियोजना पढई तुंअर दुआर में पंजीयन हेतु विद्यार्थियों द्वारा बहुत अधिक रूचि दिखाई गई। इस परियोजना में छत्तीसगढ राज्य के अलावा अन्य हिन्दी भाषी राज्यों के विद्यार्थियों के द्वारा भी रूचि दिखाई गई। परियोजना में पंजीयन की स्थिति को सारणी क्रमांक 3 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सारणी क्रमांक 3

पढई तुंअर दुआर परियोजना में महाविद्यालयीन एवं शालेय शिक्षा के विद्यार्थियों/शिक्षकों के पंजीयन से संबंधित तथ्य

क्रमांक	पढई तुंअर दुआर परियोजना में पंजीयन	सख्या
1	कुल विजिटर की संख्या	296580678
2	कुल पंजीकृत शिक्षकों की संख्या	206571
3	कुल पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या	2513577

सारणी क्रमांक 3 के माध्यम से पढई तुंअर दुआर परियोजना में पंजीयन की स्थिती को प्रदर्शित किया गया हैं इस परियोजना में पंजीयन की सुविधा शिक्षको एवं विद्यार्थियों को www.cgschool.in वेबसाईट के माध्यम से दी गयी है। इसमें पंजीकृत शिक्षकों की संख्या 206571 एवं पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या 2513577 है। यदि इस आधार पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का अनुपात देखा जाये तो लगभग 12 अनुपात 1 है, आनलाईन शिक्षा के लिये इस अनुपात को बहुत अधिक उत्तम माना जा सकता है। परन्तु यदि कुल विजिटर की संख्या को आनलाईन शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी माना जाये तो यह अनुपात लगभग 1436 अनुपात एक होता है। अभी तक इस परियोजना की वेबसाईट के विजीटर की संख्या 296580678 है, यह संख्या निश्चित रूप इस परियोजना की उपयोगिता को प्रदर्शित करती है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ राज्य में शिक्षा विभाग के माध्यम से पढई तुंअर दुआर परियोजना जिसको www.cgschool.in वेबसाईट के माध्यम से विद्यार्थियों को उपलब्ध कराया जाता है, कि उपयोगिता अत्यधिक है। इसमें पंजीकृत 2513577 विद्यार्थी आनलाईन कक्षाओं, दृश्य-श्रव्य व्याख्यानों एवं ई-सूचना

स्रोतों को सहजता से प्राप्त कर रहे। इससे कोविड 19 महामारी के कारण हुये लाकडाउन के कारण विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अवरूध पडे अध्ययन एवं अध्यापन कार्य को पूर्ण करने में बहुत अधिक सहायता प्राप्त हुई है। इस परियोजना के माध्यम से छत्तीसगढ में कोविड 19 महामारी के समय में शिक्षा में अनिश्चता को समाप्त कर उत्कृष्टता की और बढाया गया है। छत्तीसगढ राज्य की इस परियोजना का उपयोग छत्तीसगढ के अलावा अन्य राज्यों के विद्यार्थी भी उठा रहे है।

भविष्य की संभावना

छत्तीसगढ राज्य शिक्षा के क्षेत्र में पूर्व में बहुत अच्छी स्थिति नहीं थी, परन्तु राज्य के गठन के बाद से ही यहां सभी प्रकार की शिक्षा हेतु अधोसंरचना को विकसित किया गया। इन अधोसंरचना में से आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी भी एक शिक्षा के क्षेत्र में विकास हेतु एक महत्वूपर्ण संसाधन है। छत्तीसगढ में राज्य के गठन के बाद से इसको उन्नत बनाने हेतु निरंतर प्रयास प्रारंभ किये गये। समय-समय पर राज्य में वर्तमान शिक्षा हेतु अनिवार्य इन्टरनेट एवं ई-सूचना स्रोतो को अभिगम्य करने के लिये इलेक्ट्रानिक डिवाईस इत्यादि को विद्यार्थियों को उपलब्ध कराने के प्रयास किये गये यह प्रयास वर्तमान में भी निरंतर जारी है। छत्तीसगढ में निरंतर नवीन शिक्षण संस्थानों की स्थापना की जा रही है, भविष्य में इन सभी शिक्षण संस्थानों में ई-सूचना स्रोत उपलब्ध कराने एवं आनलाईन शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु योजना को प्रस्तावित किया गया है।

उपसंहार

शिक्षा किसी देश या प्रदेश में वहां के मानव संसाधन को विकसित एवं प्रशिक्षित करने का एक सशक्त माध्यम है। शिक्षा को एक निश्चित समय सारणी के अनुसार संचालित किया जाता है, परन्तु कोविड-19 महामारी के समय इस समय सारणी का पालन करना बहुत दुर्गम कार्य प्रतीक होता था। छत्तीसगढ राज्य तेजी से विकास करने वाले राज्यों में अग्रणी राज्य है, यहां समाज के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करने के लिये नवीनतम प्रयास एवं प्रयोग किये जाते है। शिक्षा को कोविड-19 के समय पूर्ण करने के लिये शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन के माध्यम से प्रयास किये गये, उनमें से सबसे महत्पूर्ण एवं महत्वकांक्षी परियोजना पढई तुंअर दुआर है। इस परियोजना को प्रारंभ में शालेय छात्र/छात्राओं को प्रारंभ किया गया था बाद में इस परियोजना की उपयोगिता को देखते हुये महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को भी इस परियोजना की सुविधाओं का लाभ देना प्रारंभ किया गया। इस परियोजना के माध्यम से वर्तमान में दृश्य-श्रव्य व्याख्यानों एवं आनलाईन कक्षाओं के अलावा विद्यार्थी की समस्याओं का निराकरण आनलाईन स्वरूप में पूर्ण किया जा रहा है। विद्यार्थियों को इस परियोजना के माध्यम से ई-सूचना स्रोतों की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जा रही है। निश्चित ही इस परियोजना पढई तुंअर दुआर के माध्यम से छत्तीसगढ राज्य विभिन्न विषय क्षेत्रों की शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सफल होगा।

संदर्भ

- Cook, K. C., & Grant-Davis, K. (2005). *Online education : Global questions, local answers*. ProQuest Ebook Central https://ebookcentral.proquest.com
- Goodfellow, R., Lamy, M., & Lamy, M. L. (Eds.). (2010). *Learning cultures in online education*. ProQuest Ebook Central https://ebookcentral.proquest.com
- पढई तुंहर दुआर, छत्तीसगढ शासन, (2020, April 23) https://cgschool.in Government of Chhattisgarh], Department of School Education, School education portal, (2020, December 11), http://eduportal.cg.nic.in
- Department of Higher Education, Government of Chhattisgarh, (2020 December 15) http://highereducation.cg.gov.in
- Indira Gandhi Krishi Vishwavidhyalaya, (2020 December 15) https://igkvmis.cg.nic.in
- Dau Shri Vasudev Chandrakar Kamdhenu Vishwavidyalaya (2020 December 20) http://cgkv.ac.in